हंसता हुआ धर्म

एक आदमी ने एक नौकर अपने घर में रखा। दो-चार दिन उसका काम देख कर वह आदमी परेशान हो गया और उसने उस नौकर को कहा : यह नौकरी चलेगी नहीं। अजीब आदमी हो, तीन अंडे बाजार से खरीदने होते है तो तुम तीन दफे बाजार जाते हो! तीन अंडे एक ही बार में खरीदे जा सकते हैं। क्या बात है? एक अंडा खरीदने गए, फिर दूसरा अंडा खरीदने गए। तीन अंडे लाने के लिए तीन दफे बाजार जाना? यह नौकरी चल नहीं सकती। या तो अपने में सुधार कर लो या कल से समाप्त समझो नौकरी को।

उस आदमी ने कहा : मेरे मालिक, मैंने सुधार कर लिया, और ऐसी भूल दुबारा नहीं होगी।

आठ दिन बाद उसका मालिक बीमार पड़ गया। उसने कहा : डॉक्टर को बुला लाओ।

वह डॉक्टर को बुला कर लाया, साथ में एक भीड़ और बुला लाया, न मालूम कितने लोगों को बुला लाया।

उसके मालिक ने पूछा : आ गए?

उसने कहा : मैं डॉक्टर को लिवा लाया और बाकी लोगों को भी लिवा लाया।

मालिक ने कहा : ये बाकी लोग और कौन है?

उसने कहा : डॉक्टर कहेगा कि दवा चाहिए, तो मैं दवा वाले को भी लिवा लाया हूं। और हो सकता है दवा काम न करे तो कब्र खोदने वाले लोगों को भी बुला लाया हूं। क्योंकि आपने ही कहा था कि तीन अंडे खरीदने के लिए तीन बार बाजार जाना जरूरी नहीं है।

एक पादरी ने एक स्कूल के बच्चों को सेवा की शिक्षा दी। और उनसे कहा कि सर्विस, सेवा ही धर्म है। तुम रोज जरूर थोड़ी बहुत सेवा किया करो। बिना सेवा किए कोई आदमी भगवान को नहीं पा सकता।

उन बच्चों ने पूछा : कैसी सेवा?

उसने कहा कि कोई नदी में डूबता हो तो बचाना चाहिए, कोई गिर पड़े तो उठाना चाहिए, कोई बूढ़ा आदमी रास्ता पार न कर सकता हो तो रास्ता पार कराना चाहिए। कुछ न कुछ सेवा का काम रोज करना चाहिए।

सात दिन बाद वह वापस आया। तो उसने बच्चों से पूछा : तुमने कोई सेवा का कृत्य किया?

तीन बच्चों ने तीस बच्चों में से हाथ उठाया। पादरी खुश हुआ, क्योंकि जमाने बदल गए हैं, तीस बच्चों में से तीन भी मान लें तो बहुत। बहुत खुश हुआ। उसने कहा : कोई हर्ज नहीं, यह भी संख्या काफी है, तीन बच्चों ने बात मान ली। बताओ मेरे बेटो, तुमने क्या सेवा की?

एक लड़के ने कहा : मैंने एक बूढ़ी औरत को रास्ता पार करवाया। बड़ी भीड़ थी, बड़ी ट्रेफिक था, बड़ी कठिनाई थी, बड़ी मुश्किल से करवा पाया। लेकिन मैंने एक बूढ़ी औरत को रास्ता पार करवाया।

उस पादरी ने उसकी पीठ ठोंकी और कहा : धन्यवाद, बहुत अच्छा तुमने किया। ऐसा सदा करो। दूसरे से पूछा : तुमने क्या किया?

उसने कहा : मैंने भी एक बूढ़ी औरत को सड़क पार करवाई। बड़ी भीड़ थी, बड़ा ट्रेफिक था।

उस पादरी को थोड़ा कुछ खयाल हुआ। फिर उसने सोचा, हो सकता है इसे भी कोई बूढ़ी औरत मिल गई हो, बूढ़ी औरतें की कोई कमी तो है नहीं। उसने कहा : तुमने भी ठीक किया।

उसने तीसरे से पूछा : तुमने क्या किया?

उसने कहा : मैंने भी एक बूढ़ी औरत को सड़क पार करवाई।

तब उसे थोड़ी हैरानी हुई। उसने कहा : तुम तीनों को तीन बूढ़ी औरतें मिल गईं?

वे तीनों एक साथ बोले : तीन नहीं, बूढ़ी औरत तो एक ही थी, हम तीनों ने इकट्ठे ही पार करवाई।

उसने कहा : हद हो गई! क्या बहुत ही बूढ़ी थी? क्या चल फिर भी नहीं सकती थी? इसलिए क्या तुमको उठा कर ले जाना पड़ा कि तीन-तीन आदमियों की जरूरत पड़ी?

वे तीनों बोले : नहीं, यह बात नहीं है। वह असल में सड़क पार करना ही नहीं चाहती थी। हमको बड़ी मुश्किल से पार करवानी पड़ी।

मुल्ला नसरुद्दीन रोज सुबह नमाज के वक्त जोर से चिल्ला कर कहता था, हे परमात्मा! एक बात खयाल रख; जब भी लूंगा, पूरे सौ रुपए लूंगा। कम मैं न लूगा। जब भी तुझे देना हो, सौ की पूरी थैली गिरा देना। और ध्यान रख, निन्यान्नबे भी न लूंगा।

पड़ोस का एक आदमी रोज यह सुनता था। उसे मजाक सूझी! उसने कहा कि रोज यह एक ही बात किए जा रहा है। और निन्यान्नबे तो यह लेगा नहीं। तो खतरा भी नहीं है। तो उस ने एक थैली में निन्यान्नबे रुपए रख कर, जब दूसरे दिन वह नमाज पढ़ रहा था, उसके छप्पर में से नीचे गिरा दी।

उसने नमाज बीच में ही छोड़कर पहले रुपये गिने और फिर कहा, वाह रे वाह! एक रुपया थैली का काट ही लिया!

— *(ओशो पुस्तकों से संकलित)*